II paper

Indian culture in Yunan

यूनान में भारतीय संस्कृति

स्याम में प्रवेश से पूर्व थाई-जाति का निवास वर्तमान चीन के दक्षिणी व दक्षिणी-पूर्वी प्रदेशों में था। तब ये प्रदेश चीन के अन्तर्गत नहीं आते थे। यहाँ थाई लोगों के अनेक स्वतंत्र राज विद्यमान थे। वर्तमान चीन का प्रान्त यूनान है। थाई राज्यों की स्थिति इसी यूनान प्रान्त में थी। चीन के राजा इन राज्यों पर बहुधा आक्रमण करते रहते थे और कभी-कभी उन्हें थाई राज्यों को अपना चक्रवर्ती बनाने में सफलता भी प्राप्त हो जाती थी। पर चीन इन्हें स्थायी रूप से अपने अधीन नहीं कर सका। नवीं शताब्दी तक ये इस स्थिति में आ गए कि चीन के भय से मुक्त होकर स्वतन्त्रतापूर्वक अपना विकास कर सकें। यूनान थाई राज्य को चीनी लोग नानचाओ कहते थे पर उसका वास्तविक नाम गन्धार था। ई० पू० ९०० में वह इसी नाम से विख्यात था। गन्धार का एक भाग विदेह राज्य था, और उसकी राजधानी मिथिला कही जाती थी। थाई लोगों के इस गान्धार राज्य में एक ऐसी लिपि प्रचलित थी, जिसका उद्गम भारत में हुआ था। यूनान की स्थानीय अनुश्रुति के अनुसार अवलोकितेश्वर ने भारत से आकर इस देश को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया था। वहाँ यह भी प्रचलित है आठवीं शताब्दी में गन्धार के एक राजा का झुकाव भारत की तुलना में चीन की ओर होने लगा। यह जानकर भारत से सात धर्माचार्य वहाँ आये और उन्होंने राजा को पथ भ्रष्ट होने से बचाया।

९वीं सदी के पूर्वार्द्ध में चन्द्रगुप्त नामक एक हिन्दु धर्माचार्य बुलाया गया था और वहाँ उसने अपने धर्म का प्रचार किया था। चन्द्रगुप्त मगध का निवासी था और मागध कहलाता था। चीनी ग्रन्थों में के अनुसार नान-चाओ (गन्धार) के राजा "महाराज" कहलाते थे और यूनान की एक स्थानीय अनुश्रुति में यहाँ के राजवंश को अशोक का वंशज कहा गया है। इस प्रदेश में ग्यारहवीं सदी के दो घंटे प्राप्त हुए हैं जिस पर संस्कृत और चीनी के अभिलेख उत्कीर्ण हैं। इन भारतीयों के सम्पर्क में आकर यूनान में थाई लोगों ने भारतीय भाषा, धर्म तथा संस्कृति को पूर्णरूप से अपना लिया था, और अपने देश को भी गान्धार तथा विदेह कहने लगे थे, इन्हीं के कारण थाई लोगों को बौद्ध धर्म के प्रति इतनी अधिक श्रद्धा हो गई कि यूनान में भी ऐसे स्थानों की परिकल्पना कर ली गई, जिसका सम्बन्ध बुद्ध के जीवन के साथ था। गृध्रकूट और बोधगया यूनान में भी परिकल्पित कर लिए गए। यह समझा जाने लगा कि बुद्ध ने जिस पीपल के वृक्ष के नीचे समाधि लगा कर ज्ञान प्राप्त किया था, वह

Scanned with CamScanner

बोधिवृक्ष युनान में था। ये सभी बातें जानकारी करने के पश्चात् है कि इस्लाम में प्रवेश से पूर्व थाई लोग जब युन्नान में निवास करते थे। तभी से भारतीय संस्कृति के प्रभाव में आ गए थे।

भारतीय संस्कृति का केन्द्र :-

नस्ल की दृष्टि से थाई लोगों का भारतीयों की तुलना में चीनियों से अधिक सादृश्य है। जिस प्रदेश में वे निवास करते थे, वह भी चीन के पास लगा हुआ था। अतः यह आश्चर्य की बात है कि उन्होंने चीनी भाषा, संस्कृति आदि को न अपनाकर भारतीय संस्कृति को अपनाया, पर इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। इसका कारण यह है कि प्राचीन काल में भारत से चीन जाने वाले के लिए एक स्थल मार्ग भी प्रयुक्त किया जाता था, और यह मार्ग युन्नान होकर जाता था। बहुत से भारतीय व्यापारी इस मार्ग से चीन जाया करते थे और उनके साथ-साथ भारतीय धर्म प्रचारक तथा विद्वान भी सुदूरपूर्व के प्रदेशों की यात्रा किया करते थे।

दूसरी सदी ई० पू० चीन के सम्राट ने चाङ्-कियन नामक राजदूत को युइशियों के सम्पर्क करने के लिए मध्य-एशिया तथा बल्ख (बैक्ट्रिया) भेजा था। बल्ख के बाजार में चीनी रेशम और बाँस की बनी वस्तुओं को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। पूछे जाने पर बताया गया कि दक्षिण की ओर शिन-तु (सिन्धु- हिन्द) देश है जहाँ से ये वस्तुएँ लायी जाती थी। चीन के इसेचुआन प्रान्त से व्यापारिक माल को स्थल के मार्गों से युन्नान लाया जाता था और वहाँ से उत्तरी बरमा, असम, तथा उत्तरी भारत में। युन्नान का स्थलमार्ग दूसरी सदी ई० पू० कितना महत्त्वपूर्ण था, यह इसी एक बात से स्पष्ट हो जाता है कि उस रास्ते से लाए हुए पण्य को सम्पूर्ण भारत तथा अफगानिस्तान को पार कर बल्ख तक बिक्री के लिए ले जाया था

चीनी यात्री इ-तिसंग के अनुसार ईसा की पहली दूसरी तथा तीसरी शताब्दियों में चीन से बीस तीर्थयात्री युन्नान होकर भारत गए थे। ९९५ ई० में चीन के सम्राट ने इसी मार्ग अपने तीन सौ धर्मदूत इस प्रयोजन से भारत भेजे थे। ताकि वे वहाँ से बौद्ध ग्रन्थों को संग्रह कर चीन ले जाएँ। वर्तमान समय में

इस स्थलमार्ग का अधिक उपयोग नहीं किया जाता। पर प्राचीन काल में यह प्रयुक्त होता था और भारत के व्यापारियों तथा धर्मप्रचारकों द्वारा इस मार्ग का प्रयोग करने के कारण यूनान के भाई लोगों का भारत तथा उसकी संस्कृति से परिचित होने का अवसर प्राप्त होता था, क्योंकि भारतीय संस्कृति उत्कृष्ट थी, जिसके कारण उन्होंने इसे अपनाया।